

विषम ज्वर पुं. (तत्.) आयु. अनियमित रूप से आने वाला बुखार जिसका कोई निश्चित समय न हो, इसमें तापमान भी एक समान नहीं रहता, शीत ज्वर, मलेरिया।

विषमता स्त्री. (तत्.) 1. असमानता 2. विषम होने की स्थिति/भाव 3. विकटता, कठिनता, प्रचंडता, तीव्रता 4. भयंकरता, भीषणता 5. प्रतिकूलता, विपरीतता 6. विलक्षणता, अनोखापन 7. भिन्नता, अंतर 8. ऊँचा-नीचा पाश्चा-काव्य. विरोधी विचारों या बिंबों की प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तुलना, वैषम्यता कला. परस्पर विरोधी रंगों की सज्जा जो चित्रकला की दृष्टि से सौंदर्यवर्धक होती है।

विषमनयन वि. (तत्.) शंकर महादेव, त्रिनेत्र।

विषमबाण/विषमायुध पुं. (तत्.) कामदेव, अनंग, विषमशर।

विषमबाहु त्रिभुज पुं. (तत्.) गणि./ज्यामि. जिस त्रिभुज की तीनों भुजाएँ अलग-अलग लंबाई की हो।

विषम-भिन्न स्त्री. (तत्.) गणि. 1. अंकगणितीय भिन्न जिसमें अंक का मान हर के मान से अधिक हो 2. बीजगणितीय भिन्न जिसमें अंश की घात हर की घात से अधिक हो। improper fraction

विषम मात्रिक छंद पुं. (तत्.) काव्य. चारों चरणों में अलग-अलग मात्राओं वाला, छंद मात्रिक छंद जो न सममात्रिक हों और न अर्ध-सममात्रिक।

विषमय वि. (तत्.) 1. विषैला, विषयुक्त, जहरीला 2. जलयुक्त, जलमय, सजल।

विषमयुग्मन वि. (तत्.) समा. असमान जोड़ा, भिन्न सांस्कृतिक/जातीय/स्तरों के व्यक्तियों में विवाह संबंध।

विषमवर्णिक छंद पुं. (तत्.) वर्णिक छंद जो न समवर्णिक हो और न अर्ध-समवर्णिक, विषम मात्रिक छंद।

विषमवृत्त पुं. (तत्.) विषम छंद, पिंगल में ऐसा छंद जिसके चरण समान वर्ण के न हो।

विषमशर पुं. (तत्.) कामदेव, अनंग, मदन।

विषम संख्या स्त्री. (तत्.) अंक गणि. वह पूर्णांक जिसमें 2 से भाग देने पर 1 शेष रहे जैसे- 1, 3, 7, 23 आदि।

विषमांग वि. (तत्.) जो संयोग न हो, जिसके अंग/योजक/अवयव भिन्न-भिन्न हों या परस्पर विरोध हों। heteromorphic

विषमाक्ष पुं. (तत्.) शिव, महादेव, त्रिनेत्र, विषमनयन।

विषमान्न पुं. (तत्.) अनियमित भोजन, प्रतिकूल भोजन।

विषमार्थ वि. (तत्.) विलोम अर्थ या शब्द, परस्पर विरोधी प्रयोजन।

विषमित वि. (तत्.) 1. ऊँचा/नीचा, ऊबड़-खाबड़ 2. जिसे विषम बना दिया गया हो 3. दुर्गम, जहाँ प्रवेश करना कठिन बना दिया गया हो।

विषमीकरण पुं. (तत्.) 1. सम को विषम बनाने की क्रिया, भाव 2. भाषा. एक प्रकार का ध्वनि परिवर्तन, शब्दों की दो समान मूल ध्वनियों में से एक की कालांतर में विषय, भिन्न ध्वनि में परिवर्तित हो जाना।

विषमेषु वि. (तत्.) कामदेव, मदन, अनंग, विषमशर, पंचबाण वाला।

विषय पुं. (तत्.) 1. वह सभी पदार्थ जिन्हें जानेंद्रियाँ शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध के रूप में ग्रहण करती हैं या अनुभव करती हैं 2. कोई ऐसी वस्तु या बात जिसके संबंध में कुछ किया जाए, कहा जाए या विचार किया जाए 3. किसी ग्रंथ/शास्त्र का प्रतिपाद्य विषय 4. अध्ययन, चिंतन या विवेचन की बात, पाठ्यक्रम में निर्धारित अध्ययन सामग्री 5. व्याख्या प्रकरण 6. विषयवस्तु, किसी कहानी-नाटक की आधारभूत कल्पना या विचार 7. किसी ग्रंथ, लेख आदि में विवेचित/विवेच्य विचार 8. सांसारिक वस्तुओं या व्यक्तियों से प्राप्त होने वाला सुख, इंद्रिय सुख 9. सांसारिक भोग विलास एवं इसके साधन/